आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:20-08-14

इस विकारी, कष्टभरी, मायावी कलयुगी दुनिया से मनुष्य आत्माओं और प्रकृति को मुक्त कर सुख और शांति की दुनिया में ले जानेवाले, सुख कर्ता - दुख हर्ता बाबा ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - दुख हर्ता सुख कर्ता बाप को याद करो तो तुम्हारे सब दुख दूर हो जायेंगे, अन्त मति सो गति हो जायेंगी.

भक्ति में जिसे बार-बार पुकारते थे, हे सुख कर्ता, दुख हर्ता आओ और हम दुखियों के दुख दूर करो. वही परमात्मा ने स्वयं आकर हम बच्चों को ज्ञान दिया है कि कैसे वह अपना सुख कर्ता, दुख हर्ता का पार्ट अभी बजाते है?

जब हम मनुष्य आत्माये इस बेहद के सृष्टि चक्र के ड्रामा में पार्ट बजाते-बजाते, संपूर्ण सतोप्रधान से ड्रामा के अन्त में संपूर्ण तमोप्रधान बन जाती है तो हमारी आत्मा भी संपूर्ण सुखी से संपूर्ण दुखी हो जाती है. दुखी मनुष्य आत्माये, उस ईश्वर या परमात्मा को याद करती है, क्योंकि वह जानती है कि उसने ही कर हमें सुखी बनाया था. इसलिए फिर से आत्माये, ड्रामा अनुसार, इस कल्प के अन्त में, वही परमात्मा को याद करती है और कहते है - हे सुख कर्ता - दुख हर्ता, पतित-पावन आकर हम आत्माओं को पतित से पावन बनाकर, इस दुखों से मुक्त कर सुख में ले जाओ. इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर, स्वयं भगवान, ईश्वर या परमात्मा अभी वही पार्ट बजाने इस धरा पर पधारे है.

सबसे पहले, वह आकर हम दुखी मनुष्य आत्माओं को सुख में जाने का रास्ता बताते है यानी ज्ञान देते है. फिर हम मनुष्य आत्माये, उस परमात्मा के संग में रहकर, इस कलयुगी, मायावी रावण कि विकारी दुनिया से वैराग्य करते है. जैसे की हम भगवान का साथ लेकर माया से युद्ध करते है. इस युद्ध में भगवान हमें पूरा साथ देते है और भगवान की मदद से हम माया पर विजय प्राप्त करते है. लेकिन इस युद्ध में हम भगवान का साथ तभी अनुभव करते है जब हम उसकी याद में रहते है. अगर हम भगवान को भूल, अपने आप ही माया से युद्ध करते है तो माया से हार खानी पड़ती है.

इसलिए बाबा हमें याद का महत्व समझाते है की उस सुख कर्ता - दुख हर्ता परमात्मा को याद करने से अभी माया से तो बचे रहेंगे और साथ-साथ हमारे लास्ट 63 जन्मो के पाप, जो हमारे विकारों के रूप में हमारी आत्मा में हैं, उसे भी भस्म करते जाते है. जैसे-जैसे हमारी आत्मा बाबा कि याद से विकारों से मुक्त होती जाती हैं वैसे-वैसे हम आत्माये, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती जाती है.

जब हम आत्माये बाबा की याद में रहकर सब विकारों से मुक्त होकर संपूर्ण सतोप्रधान या संपूर्ण पवित्र बन जाती है और बाबा की याद में रहकर ही इस कलयुगी देह का भी त्याग करती है तो हमारी आत्मा, विजयी-रतन आत्मा कहलाती है और बाबा के पास सूक्ष्म-वतन चली जाती है. फिर सतयुग में श्रीकृष्ण के साथ ऊँच पार्ट बजाने फिर से इस धरा पर आती हैं.

बाबा की याद और साथ सदा रहे, इसलिए नीचे बताई ड्रिल बार-बार करें.

सिमरन करें -- "बाबा मेरे साथ है, बाबा मेरे पास है."

फील करें -

बाबा मेरे साथ है यानी अभी बाबा मेरे साथ चल रहे है, में जो भी संकल्प - कर्म करता हूँ उसमें बाबा मेरे साथ है.

बाबा मेरे पास है यानी परमधाम में बाबा मेरे पास हैं.

एक सेकेण्ड यहॉ बाबा के साथ का अनुभव करें, दूसरी सेकेण्ड परमधाम में, बिजरूप अवस्था में बाबा के पास का अनुभव करें. दिन भर में इसकी प्रैक्टिस बार-बार करें.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email:
a.brahmin.soul@gmail.com .